एवरशाइन

मानक
हिंदी व्याकरण

अशोक लव
एम. ए. (हिंदी), बी. एड. (दिल्ली विश्व.)
पी. एच. डी. (मानद) डी. लिट्. (मानद)
साहित्यालंकार, साहित्यश्री, साहित्य मनीषी

3

एन. सी. ई. आर. टी. पाठ्यक्रम और नई शिक्षा नीतियों के अनुसार

प्रकाशक

एवरशाइन पब्लिशर्ज़

सोनी हाउस, WZ-348, नाँगल राया, नई दिल्ली-110046

फोन: 28111758, 28113958 फैक्स: 28112353

ई-मेल: evershinepub@gmail.com

भूमिका

व्याकरण भाषा के शुद्ध प्रयोग का ज्ञान कराता है। भाषा के मौखिक और लिखित रूपों का ज्ञान व्याकरण द्वारा होता है। हिंदी भाषा विश्व की प्रामाणिक वैज्ञानिक भाषा है। इसकी संरचना वैज्ञानिक पद्धति से हुई है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता है कि इसे जिस रूप में लिखा जाता है, इसका उच्चारण भी उसी रूप में किया जाता है। इसलिए इसके व्याकरण के ज्ञान से इसके मौखिक और लिखित दोनों रूपों पर समानाधिकार आ जाता है।

समय तेज़ी से बदल रहा है। इसके साथ-साथ शिक्षा-पद्धितयों में भी तेज़ी से परिवर्तन आ रहा है। संचार माध्यमों के प्रचार-प्रसार और विश्वीकरण का प्रभाव शिक्षा जगत पर भी पड़ा है। भाषा पर इन सबका प्रभाव पड़ रहा है। संसार में वही भाषा जीवित रहती है जिसने विज्ञान और इलैक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में हुए परिवर्तनों को स्वीकार करके नवीन स्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लिया है। हिंदी इन परिवर्तनों को स्वीकार करके समृद्ध हुई है।

व्याकरण की यह श्रृंखला इन समस्त स्थितियों को समक्ष रखकर तैयार की गई है। इसकी भाषा विद्यालयों के विद्यार्थियों के स्तरानुकूल है। पांडित्य प्रदर्शन हेतु संस्कृत की तत्सम प्रधान शब्दावली से बचा गया है। इस पुस्तक श्रृंखला में विद्यार्थियों को केंद्र में रखा गया है। नियमों-उपनियमों और अभ्यासों की भाषा बोधगम्य है। इसका उद्देश्य है - विद्यार्थी पढ़कर इन्हें स्वयं समझ सकें।

व्याकरण जैसे नियमों-उपनियमों से भरे शास्त्र को शुष्क एवं नीरस माना जाता है। इस श्रृंखला की प्राथमिक स्तर की पुस्तकों (भाग तीन, चार और पाँच) को रंगीन चित्रों के माध्यम से आकर्षक बनाया गया है। विभिन्न नियमों को जीवन के साथ संबद्ध करके समझाया गया है। बाल-गीतों की पंक्तियों और गीतों के माध्यम से व्याकरण पढ़ाने का नया प्रयोग व्याकरण जगत में पहली बार किया गया है। इससे विद्यार्थियों की व्याकरण पढ़ने में रुचि बढ़ी है। अध्यापक-अध्यापिकाओं ने इस प्रयोग की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

प्राथमिक स्तर पर हिंदी भाषा के व्याकरण का अध्ययन-अध्यापन सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है। इसी स्तर पर विद्यार्थी भाषा सीखना आरंभ करता है। भाषा की नींव इसी समय रखी जाती है। मात्राओं का उचित प्रयोग करने से लेकर अनुच्छेद और कहानी-लेखन कक्षा पाँच तक हो जाता है। इन कक्षाओं में व्याकरण-अध्ययन अत्यंत आवश्यक होता है। इसलिए इस स्तर की पुस्तकों को अध्यापक-अध्यापिकाओं की आवश्यकताओं और विद्यार्थियों की आयु और ग्रहण-क्षमता को समक्ष रखकर तैयार किया गया है।

माध्यमिक स्तर की पुस्तकों की भाषा भी सहज और सरल है। इनके उदाहरण आम जीवन से संबद्ध हैं। ये विद्यार्थियों के परिवेश से सीधे जुड़े हुए हैं। अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयों में विद्यार्थियों और अध्यापक-अध्यापिकाओं को जो कठिनाई आती है, उसे भी दृष्टिगत रखकर भाग छह, सात आठ को तैयार किया गया है। अभ्यास के लिए पर्याप्त प्रश्न दिए गए हैं।

प्रश्नों के साथ ही उत्तरों के लिए पर्याप्त स्थान रखे गए हैं। इसमे विद्यार्थियों को गृह-पुस्तिकाओं में कार्य करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। यदि प्रत्येक अध्याय के साथ दिए गए 'प्रश्न और अभ्यास' गंभीरतापूर्वक किए जाएँगे तो विद्यार्थी व्याकरण में पारंगत हो जाएँगे।

साहित्य के क्षेत्र में लगभग तीस वर्षों के निरंतर लेखन एवं अध्यापन के दो दशकों से अधिक के अनुभव के पश्चात व्याकरण-लेखन का उद्देश्य है कि विद्यार्थियों की हिंदी भाषा में रुचि जाग्रत हो। वे इसका शुद्ध प्रयोग करें। उनकी अभिव्यक्ति क्षमता विकसित हो। उनकी राष्ट्रभाषा के प्रति सकरात्मक सोच बने। इस श्रृंखला से उनकी हिंदी साहित्य के प्रति रुचि विकसित होगी। आशा है व्याकरण पुस्तक की यह श्रृंखला अध्ययन-अध्यापन के अपने उद्देश्य में सार्थक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक को विभिन्न राज्यों के शिक्षा विभागों, एस.सी.ई.आर.टी, एन.सी.ई.आर.टी और सी.बी.एस.ई. की पाठ्यक्रम नीतियों और पाठ्यक्रमों को दृष्टिगत रखकर तैयार किया गया है। अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यार्थियों के लिए यथास्थान अंग्रेज़ी के पर्यायवाची शब्द दिए गए हैं।

आशा है हिंदी भाषा के अध्यापक-अध्यापिकाएँ इस पुस्तक-श्रृंखला का अपनी सहायिका के रूप में स्वागत करेंगे। उनके द्वारा ही ज्ञान प्रदान करने का पावन कार्य संपन्न होता है। उनके इस समर्पित, पावन और अतुलनीय कार्य में यह पुस्तक सार्थक भूमिका निभा सकेगी, ऐसा हमारा विश्वास है।

विद्यार्थियों के साथ-साथ उनके माता-पिता भी इसे रुचिकर एवं उपयोगी पाएँगे। आप सबकी प्रतिक्रिया और सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

अशोक लव

विषय-सूची

क्रम	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	भाषा (Language)	5
2.	वर्ण (Alphabets)	7
3.	मात्राएँ (Vowel's Signs)	10
4.	संज्ञा (Noun)	16
5.	लिंग (Gender)	19
6.	वचन (Numbers)	23
7.	सर्वनाम (Pronoun)	27
8.	विशेषण (Adjective)	31
9.	क्रिया (Verb)	34
10.	विपरीत अर्थ वाले शब्द (विलोम) (Antonyms)	38
11.	समान अर्थ वाले शब्द (पर्यायवाची) (Synonyms)	42
12.	मुहावरे,अर्थ और प्रयोग (Idioms, Meanings & Usages)	46
13.	अनेक शब्दों के लिए एक शब्द (One Word for Group of Words)	50
14.	दिन, महीने और ऋतुएँ (Days, Months and Seasons)	52
15.	अनुच्छेद-लेखन (Paragraph Writing)	55
	(1) मेरी कक्षा	
	(2) मेरा जन्म-दिन	
	(3) मेरा घर	
	(4) मेरे नए जूते	
	(5) वह नीम का पेड़	
	(6) पंद्रह अगस्त	
	(7) मैंने दीवाली मनाई	
16.	कहानी-लेखन (Story Writing)	60
	(क) बिन माँगी सलाह	
	(ख) चतुर लोमड़ी	
	(ग) गधे ने सुधारा	

1. भाषा (Language)

गर्मी की छुट्टियाँ बिताने के लिए राजीव अपने दादा जी के पास चला गया। उसके दादाजी पूर्णिया में रहते हैं। राजीव ने दादा जी को अपने स्कूल के बारे में अच्छी-अच्छी बातें बताईं। दादा जी सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। दादा जी ने राजीव को ढेर सारे उपहार दिए। वह राजीव को रोज़ नई-नई कहानियाँ सुनाते। राजीव बड़े ध्यान से उन कहानियों को सुनता। छुट्टियाँ समाप्त होने पर राजीव स्कूल चला आया। स्कूल आकर उसने दादा जी को पत्र लिखा। पत्र को पाकर दादा जी गद्‌गद्‌ हो उठे।

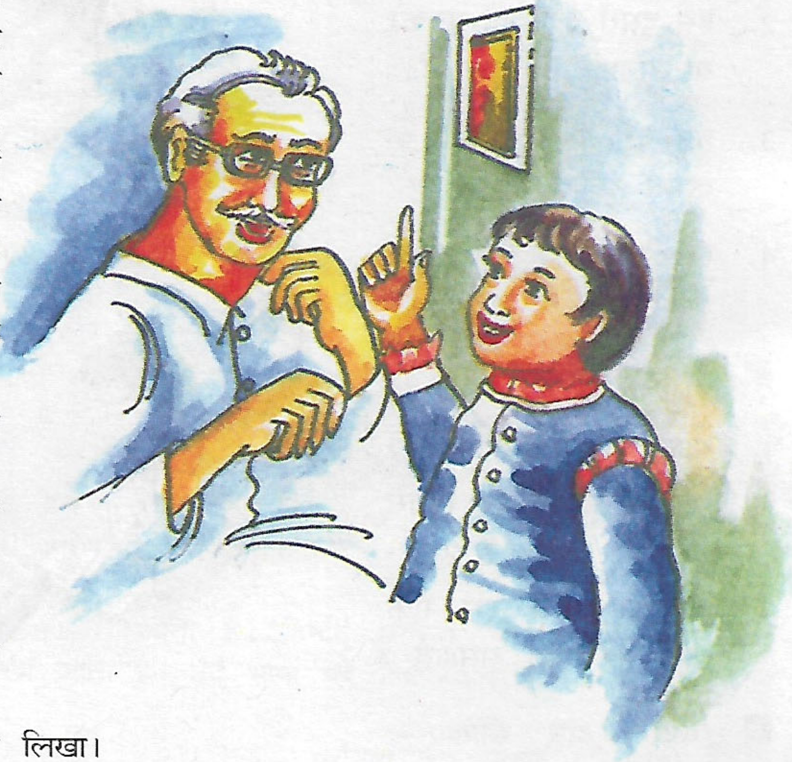

✶ राजीव ने दादाजी को अपने स्कूल की बातें बताईं।

✶ दादा जी ने राजीव की बातें सुनीं।

✶ दादा जी ने कहानियाँ सुनाईं।

✶ राजीव ने उन कहानियों को सुना।

✶ राजीव ने दादा जी को पत्र लिखा।

✶ दादा जी ने राजीव का पत्र पढ़ा।

हम **बोलकर** या **लिखकर** अपनी बात दूसरों को बताते हैं। हम **सुनकर** या **पढ़कर** दूसरों की बातें जानते हैं।

यह कार्य हम भाषा की सहायता से करते हैं।

अतः भाषा के द्‌वारा हम बोलकर और सुनकर तथा लिखकर और पढ़कर एक-दूसरे के विचारों को जान पाते हैं।

भाषा विचारों के आदान-प्रदान का साधन है।

प्रत्येक देश में अलग-अलग भाषाएँ बोली जाती हैं।

एक देश के अलग-अलग प्रांतों में भी अलग-अलग भाषाओं का प्रयोग होता है।

ध्यान दीजिए

1. हम दूसरों की बातें भाषा के माध्यम से समझते हैं।
2. हम दूसरों की बातें पढ़कर या सुनकर समझते हैं।
3. हम अपनी बात भाषा के द्वारा बताते हैं।
4. हम अपनी बात लिखकर या बोलकर बताते हैं।

उत्तर दीजिए

1. भाषा का क्या कार्य है ?
2. भाषा किस प्रकार हमारी सहायता करती है ?
3. किसके द्वारा हम एक दूसरे की बात समझते हैं ?

करिए और सीखिए—

1. अपने स्कूल में पढ़ रहे अलग-अलग प्रांतों के मित्रों से पूछिए कि वे कौन-कौन सी भाषाएँ बोलते हैं।
2. नीचे दिए गए बाईं ओर के वर्गों में भारत की कुछ भाषाओं के नाम छिपे हैं तथा दाईं ओर के वर्गों में विदेशी भाषाओं के। खाली जगहों को भरकर इन्हें पहचानिए।